कुमाऊँ में भी रही है सुगबुगाहट

डॉ. अनिल कुमार कार्की

नुक्कड़ नाटक को लोकनाट्य से निसृत विधा के रूप में विद्वानों ने व्याख्यायित किया है। कुमाऊँ में लोकनाट्य की बहुत सी विधाएँ प्रचलित हैं, परन्तु फिर भी नुक्कड़ का लोकनाट्य से इतना सीधा सम्बन्ध नहीं जान पड़ता। उत्तराखण्ड एक पर्वतीय राज्य है। सांस्कृतिक रूप से हिमालय की उपत्यका में बसा यह राज्य एक विशिष्ठ सांस्कृतिक संदर्भ रखता है। इतिहास, अर्थ, मिथक, राजनीति, पर्यावरण, धर्म, संस्कृति के सन्दर्भ में इसने देश और दुनिया को प्रभावित किया है और उनसे प्रभावित भी हुआ है। यह क्रम आज भी अनवरत रूप से जारी है। उत्तराखण्ड की लोकनाट्य शैली में हिलजात्रा, हिरन चितल, स्वाँग आदि लोक नाटकों का नुक्कड़ नाटक से कुछ साम्य तो दिखता है पर कालान्तर में इनका विकासक्रम बाधित हो गया और अब यह केवल एक सांस्कृतिक संदर्भ बन कर रह गये हैं।

नुक्कड़ का संदर्भ नवउदारवाद के उदय के साथ ज़्यादा प्रभावी हुआ जिसकी ख़ास वजहें थीं—नवउदारवाद की आड़ में मुक्त व्यापार और राज्य स्वामित्व वाली संस्थाओं को निजी क्षेत्रों में दे देना, सार्वजनिक व्यय को कम करना, डीरेगुलेशन, लोकहित का उन्मूलन, साम्प्रदायिकता के सवाल! इन्हीं उदारवाद एवं साम्प्रदायिकता के दबावों को व्यक्त करने के लिए नुक्कड़ नाटक एक ख़ास विधा बन कर भारत में उभरा। इसलिए नुक्कड़ नाटक के संदर्भ आधुनिक हैं। जार्ज लुकाच ने कहा है कि 'विषयवस्तु में परिवर्तन ही कला रूपों में परिवर्तन का मूल कारण है।' नैनीताल नुक्कड़ नाटक समारोह १९८९ के ब्रोशर जो कि सफ़दर हाशमी और राम बहादुर की याद के साथ आरम्भ होता है, उसमें लिखा गया है 'आज हमारी अस्मिता पर दो तरफ़ से हमला हो रहा है। एक, विकृत पूँजीवादी मूल्य जो तंत्र ने पैदा किया है वह विज्ञापन संस्कृति और उपभोक्तावाद के ज़रिये पूरे देश को खोखला कर रहा है। दूसरा, धार्मिक उन्माद के रास्ते देश को टुकड़ों में बाँट देने की साज़िश की जा रही है।'[१]

हिन्दी कविता में कुछ विद्वानों ने १९६५-६६ में नयी कविता और नक्सलबाड़ी आन्दोलन के साथ ही नुक्कड़ नाटक आन्दोलन को भी जोड़ा है। लोगों का मानना है कि लोक कलाओं की नींव से निकले नुक्कड़ नाटक ने आठवें दशक में जनता के दुख-सुख-पीड़ा, उम्मीद और आकाँक्षाओं को अभिव्यिक्ति दी। नुक्कड़ नाटकों ने जनवादी आन्दोलनों को गति देने का कार्य बखूबी किया। श्रमिक वर्ग को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करके या सर्वसाधारण को आम भाषा में राजनैतिक प्रतिवाद की राजनीति तो अपने आरम्भिक दौर में नुक्कड़ नाटकों ने ही सिखायी।

जिस तरह इप्टा ने पूरे भारतवर्ष में आम जन के अधिकारों और मुद्दों को लेकर नाटक किए, आम जनता